ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 220-223

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

मल्ल गणतंत्र और बौद्ध धर्म

कवीन्द्र भगत
अध्यक्ष, पालि विभाग, तारा महाविद्यालय, काको– जहानाबाद, (बिहार), भारत

Received- 21.08.2020, Revised- 25.08.2020, Accepted - 28.08.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : *कभी कदार किसी वर्ग या जाति देश या समाज विशेष के प्रतिभामान तथा गरिमापूर्ण जीवनवृत्तों के चित्र परिस्थिति के झंझावात में पड़कर धूमिल होते–होते कालान्तर में अपना अस्तित्व ही खो बैठते हैं। जिसके उत्सर्ग और मनुजोचित भावनाओं के उद्रेक को पुनर्स्मृत कर के हम एक ओर जहाँ आसूधार में उबने लगते हैं वहीं दूसरी ओर उस अतीत के प्रकाश में वर्तमान को परखते हुए अपने सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन की भावी सम्पन्नता और सुख–शान्ति की मूक प्रेरणा भी ग्रहण करते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– वर्ग, जाति, समाज विशेष, प्रतिभामान, गरिमापूर्ण, जीवनवृत्तों, परिस्थिति, झंझावात,कालान्तर ।

भारत के इतिहास में एक ऐसा स्वर्ण युग मिलता है जिसमें सम्पूर्ण आर्यावर्त्त के शासन को सोलह महाजनदों में हम बिखरा पाते हैं। इन सारे जनपदों में विभिन्न प्रकार की शासन व्यवस्था थी। कहीं राजतंत्र, कहीं गणतंत्र, कहीं तानाशाह, तो कहीं धर्मतंत्र (धर्म गुओं का शासन) व्यवस्था थी। इन्हीं में बुद्ध–काल के पूर्व से इनके निर्धनोपरान्त तक की सभ्यता–संस्कृति की अग्रता के कारण उत्तर प्रदेश के मल्लगण राज्य भी इस भारत भूखण्ड का स्वर्ग माना जाता था, जिसके नष्टावशेष राज महल, उनकी कला–कृतियों के खण्डित चिन्ह् और सबसे बढ़कर बुद्ध–कालीन साहित्यों में अंकित उन पूर्वज नर–नारियों के जीवन चरित्र तत्कालीन मल्ल जाति की गौरव गाथा के प्रति प्रतीक है। मल्ल शब्द लड़ने–भिड़ने खासकर कुश्ती युद्ध के लिए भी प्रयुक्त होता है। चूँकि इस जाति के लोग वीर लड़ाके होते थे। अतः इस कारण भी इन्हें मल्ल कहा गया है। बेरंदहम जीम चंतं ये मल्ल कौन थे तथा क्यों ये इतिहास में गौरव स्तम्भ माने जाते हैं, ये सारी बातें आज शोध के वर्ण्य विषय हैं। तथापित इतिहास वेत्ताओं के अनुसार मल्ल (ईसवी पूर्व दशवीं शताब्दी में आर्यों द्वारा उत्तर प्रदेश के देवरिया जिलान्तर्गत अवस्थित जंगली क्षेत्रों में स्थापित एक गणतंत्र था। पश्चिम से आए हुए आर्यों की सन्तान हैं। इनके पिता यह "मालव" महापराक्रमी क्षत्रीय थे। अतः इसी कारण इस जाति को मल्ल कहा जाता है। ईसवी पूर्व दशवीं शताब्दी में मल्ल जाति के आर्य पूर्वजों ने उत्तर प्रदेश के देवरिया जिलान्तगत अपना शासन स्थापित किया जिसे ही मल्ल गणतंत्र कहा जाता है। क्योंकि इसके शासक और समस्त निवासी मल्ल जाति के लोग ही थें इस गणतंत्र की राजधानी कुशीनगर या वर्तमान कुशीनगर में थी। लगभग सातवीं शताब्दी में पावानगर (उत्तर प्रदेश के वर्तमान देवरिया जिला में अवस्थित) एक उपशासन केन्द्र बन गया और इस तरह मल्ल जनपद दो शासन केन्द्रों में विभक्त हो गया।

डॉ0 काशी प्रसाद जायसवाल (हिन्दू राजतंत्र भाग–1, पृष्ठ–74) के मतानुसार मल्ल गणतंत्र की सीमा गोरखपुर जिला से लेकर पटना के आस–पास तक फैली थी। पालि साहित्यानुसार बुद्ध चर्चा पृष्ठ–438 वज्जी जनपदों में अवस्थित (हस्ति ग्राम (हथुवा) के कुछ पश्चिम तक इस जनपद की पूर्वी सीमा थी। पाटलिपुत्र के निकट गंगा के एक छोर पर वज्जी जनपद था और दूसरे छोर पर मल्ल (सूत्रदशम पृष्ठ 81) दक्षिण में सरयू और पश्चिम में अचिरवती तथा अनोमा सीमान्त सरिताएँ थी। उत्तर में हिमालय के तराई भाग तक मल्ल जनपद के फैलाव के मध्य हिरण्यवती ककुत्था सवर्ण खण्णुका छोटी गंडक आदि अनेक नदियाँ बहती थीं। वज्जी जनपद मल्ल जनपद के पूरब तथा पश्चिम में कोलिय और प्पिलिवन के गणतंत्र थे। उत्तर में हिमवृत प्रदेश तथा दक्षिण में अल्लकप्प और काशी जनपदों की सीमाएँ सटती थी।

इस पकार मल्ल गणतंत्र की चतुर्दिक सीमाएँ प्राकृति युभावनें और प्रमद उपादानों से घीरी इस गणतंत्र को नन्दनवन सा अलंकृत किए थी।

अबतक हमने मल्ल जाति, मल्ल गणतंत्र एवं उसकी राज्य सीमा की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त थी। अब हम इस विशिष्ट गणतंत्र के तत्कालीन वैभव सर्वांगीन विकासोन्मुख गुणों तथा उन विशेषताओं की ओर मुड़ें जिनके कारण इस जाति के नर नारी इतिहास में हमसे श्रद्धा और आदर्शानुकरण की अपेक्षा रखते हैं।

मल्ल गणतंत्र की शासन व्यवस्था निश्चय ही धर्मावलम्बित थी। परस्पर मैत्री, सहयोग, त्याग, क्षमा, सहानुभूति और विश्वास पर टिका हुआ मल्ल समाज सर्वविध उत्कर्ष

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

के शीर्ष पर था। अनुयियायून ग्राम, उसवेल कप्प, भाग नगर, अम्वग्राम तथा जम्बु ग्राम जैसे अनेक सुसम्पन्न ग्राम और नगर थे । अनुयिया में ही भद्दिय अनुरूद्ध, आनन्द, भृगु किम्विल, देवदत्त और उपाली जैसे ख्यात लोगों को तथागत ने प्रवजित किया था। ये सारे नगर अपने त्याग, धार्मिक उद्रेक एवं समृद्ध भाव के लिए पालि साहित्य में स्मृत हैं तथापि मल्लों की राजधानी कुशीनगर एवं पावर अपने विशेष वैभवों के कारण चार बौद्ध तीर्थ स्थानों (1) लुम्बिनी वन जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था। (2) बोध गया जहाँ सिद्धार्थ बुद्धत्व प्राप्त किया। (3) ऋषि पतन भगदाव जहाँ तथागत ने प्रथमतः उपदेश किया तथा (4) कुशीनारा जहाँ भगवान ने पार्थिव शरीर का त्याग किया, में माना जाता है। कुशी नगर उत्तर प्रदेश में देवरिया जिला में हिरण्यवती के तट पर अवस्थित एक नगर है। बुद्धकाल में वज्जी और कुशीनगर यही दो अधिक शक्तिशाली गणतंत्र थे। विकट वनकान्तारों को लाँघ कर आने वाले वशिष्ट गोत्रीय मालव क्षत्रियों–मल्लों ने शाल वृक्षों एवं झाड़–झंखाडें को काट कर जिस स्थान को रमणिक रूप में बसाया वहीं आज कशीनगर है। भगवान बद्ध अपने जीवनकाल में अनेक बार वहाँ पधारें और और मल्लजनों को सदुपदिष्ट किए थे। अपने जीवन की अन्तिम यात्रा के क्रम में राजगृह से चल कर अम्वलट्ठिका (वर्तमान नालन्दा जिलान्तर्गत अवस्थित सिलाव) नालन्दा, पाटलिग्राम (वर्तमान पटना) वैशाली, कोटिग्राम, अम्वग्राम, जम्बु ग्राम होते हुए पावा को लाँघ कर कुनीनगर पहुँचे और वैसाख की पूर्णिया की रात्री में वहाँ उनका देहावसान हुआ।

उस समय कुशीनगर के मल्ल जाति स्वाभिमानी और स्वतंत्रता प्रिय थे। प्राक बुद्ध कालीन कुशीनगर राजा महासुदर्शन की कुशावती नामक राजधानी थी जहाँ धन–ध ाान्य, असंख्य वैभव विभूतियों कला–कृतियों, विध्याओं एवं सर्वविध सम्पन्नताओं का सामग्राज्य था। महासुदर्शन जातक तथा महापरिनिवान सुत्र के अनुसार बुद्धकालीन कुशीनारा की शोभाशाल बन उपवतन, हिरण्यवती की किल किलाती धारा तथा नगर विधि मुकुटबन्ध, आपण्ण, संस्थागारादि के कारण स्वर्ग को भी मात देती है। यह नगर चारों ओर से सुदृढ़ प्रकारों से घिरी थी तथा चारों दिशाओं में एक–एक प्रवेश द्वार बने थे। नगर की अटालिकाएँ पंक्तिबद्ध आकार में निर्मित थीं। स्थान–स्थान पर शाल, नीम, बरगद एवं अश्वत्य वृक्षों की सुखद छाया तनोवा को मात करती थी। वणिक विधि में एक सुव्यवस्थित आवस्थागार (अतिथिशाला) था जहाँ वागत व्यक्ति रात्रि में विश्राम करते थे। नगर के चारों प्रवेश द्वारों पर एक–एक अतिथि गृह था जहाँ प्रवेश द्वारा के बन्द हो जाने पर नावागन्तुक लोग रात में ठहरा करते थे। हिरण्यवती नदी के ही तट पर मुकट बन्ध नामक एक प्राचीन देवस्थल था जहाँ मल्ल गणतन्त्र के सदस्य एवं गणाधीा शपथ ग्रहण कर राज का कार्यभार ग्रहण करते थे। इस स्थान को अभिषेक तीर्थ भी कहा जाता था। यहाँ सुनिर्मित संस्थागार (संसद भवन) तथा विनिश्चयशाला (दण्डाधिकारी भवन) भी थे। इस प्रकार यह नगर सुसंगठित शक्तिशाली, सुसम्पन्न एवं मुग्धकारी प्राकृतिक दृश्यों एवं समस्त वैभवों से आप्लावित था। यहाँ के मल्लों ने ही तथागत के राव को सप्ताह कर धूप–दीप, फूल–माला एवं अन्य मूल्यवान सुगधित द्रव्यों से सजा कर नगर में जुलूस–उत्सव मनाते हुए गाजे–बाजे के साथ घुमाकर नगर वासियों को श्रद्धांजलियाँ अर्पित करने के सुअवसर प्रदान करते हुए अन्त में मुकटबन्ध चैत्य में दाह संस्कार किया और उनकी भस्मिभूत अस्थि पर अष्टधातुओं के व्यय से विशाल स्मारक एवं स्तूप का निर्माण करवाया। वर्तमान माथा कुँवर जिसमें तथागत की बीस फुट लम्बी मूर्ति प्रतिस्थापित की गई जो आज भी दाहिनी कर वटावस्था में युगलशाल वृक्षों के मध्य वहाँ विद्यमान है। यहीं सुभद्र को बुद्ध के अन्तिम शिष्यत्व ग्रहण का सौभाग्य मिला था। मल्ल गणतंत्र की दूसरी राजधानी पाड़ा में थी जो वर्तमान कुशीनगर से छः मील की दूरी पर अवस्थित वर्तमान गोरखपुर के पडरौना गाँव या कुशीनगर से दस मील दक्षिण पूर्व में स्थित फाजिलनगर के सठियाँव डीह है। दीघ निकाय में पासादिकसुत तथा मज्झिम निकाय के सामगाय सतुतन्त के अनुसार जैनों के अंतिम तीर्थ कर भगवान महावीर का निधन इसी पावर में हुआ था।

अपनी अन्तिम यात्रा में तथागत पवा होकर ही कुशीनगर पहुँचे थे। उस समय पावा भी कुशीनगर की ही तरह सुभिक्ष्य, सर्व वैभव सम्पन्न एवं धर्म सम्पन्न नगर था। इस नगर के महासेठ चुन्द कर्माठपुत्र ने भगवान बुद्ध के सुस्वास्थ्य के लिए श्रद्धावस मगध के तत्कालीन विश्व विश्रुत चिकित्सक जीवेक द्वारा विशाल धन राशि के व्यय से एक शक्तिशाली द्रव्य औषध का निर्माण कर वत्या जिसे उसने अपने यहाँ आमंत्रित तथागत को भेजन काल में परोसा था। इस औषध का नाम सुकर भादव था जिसे खाते ही भगवान को असह्य उदर पीड़ा होने लगी और उसी रात को उन्होंने कुशीनगर में महापरिनिर्वाण (महामोक्ष) प्राप्त किया। मृत्यु के पूर्व तथागत ने चुन्द में इस भोजन को पुण्यार्जय के योग्य तथा स्वर्ग दिलाने वाला कहते हुए इसकी तुलना 'सुजाता' के भोजन करते हुए कहा था "दो भोजनों सुजाता द्वारा समर्पित खीर तथा चुन्द द्वारा अर्पित सुकर मद्दव मेरे जीवन में समान रूप से लाभकारी एवं महत्वपूर्ण हैं जिसे खाकर सिद्धार्थ बुद्ध बने तथा दूसरे का

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

खाकर बुद्ध ने ऐहिक शरीर का परित्याग किया अर्थात् सुजाता के भोजन ने निर्वाण (मोक्ष)दिया तो चुन्द्र के भोजन ने महापरिर्वाण (महामोक्ष) मल्ल गणतन्त्र के अविस्मलीय व्यक्ति चुन्द ने अपना वस्त्र अर्पित कर जातिवन महा विहार के निकट ही आम्रवन में तथागत की अस्थियों पर पचास पोरस उँचा सुधालोपित ईंटों की जोड़ाई से एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया। चुछ की प्रति सुभागा, पुत्र नागित पुत्र वधू–नन्दा एवं पत्नी शीलवती गृह त्याग कर भिक्षु भिक्षुणी बन गए। बाद में चुन्द के परिनिवृत होने पर पावर के मल्लों ने उसकी स्मृमित में भी एक स्तुप का निर्माण करवाया जिसका ध्वंसावशेष आज भी फाजिल नगर ग्राम में पड़ा है।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता एवं गणतंत्र के रक्षार्थ आत्माउत होने वाले मल्लों की शूरता एवं धीरता की वानगी ध्यकिरात युद्ध में ईसवी पूर्व दशवीं शदी के मल्ल कुमार इन्द्रजीत एवं उसकी बहन वीरांगना माला के उदाहरण में पाते हैं। मल्ल सेना नायक इन्द्रजीत के वक्ष पर आते हुए संघे सधाए निशाने को अपने उपर झेल लेने के उपक्र में माला ने जो वीर गति प्राप्त की वह मल्लों तिहास का एक स्मरणीय स्वर्णाक्षर है।

पूर्वी पूर्व पाँचवीं शताब्दी में मल्ल का सार्थवाह राज कुमार सुवाहु ने जिस पौरूषयुक्त एवं निभीक उत्तर से कोसल नरेश विड्डभ को पराजित कर उसकी कन्ध 'सुजा' को पानी ग्रहण किया वह किसी भी नारी पुरूष के हृदय में कर्तव्य और प्रेम की समान महत्व से प्रति पादन–ज्ञान कराने को पर्याप्त है।

कब होइतें इहाँ विहनबा हो, सुंगतपुरिया के सुतल जवा? दुहुँ अईहै करवन नगरिया हो, जस लतिका बनि के नव निरबान?

ये पद आज भी खेतों में काम करने वाले तथा मचानों पर लेते खेत रक्षक "सुगतपुरी" निवासी कुशीनर के निकट अवस्थित के जवानों पर गुँज उठते हैं।

मल्ल वीर जयसेन ने प्रेम के नाम पर जाति धर्म को कुर्बान करके कुशानवंश की यूची वाला को जिसका नाम "माधवी" था गले लगाया और प्रेम की दीवानी माधवी ने प्रेम विश्वास पर अपनी जान न्योछावर कर दी।

आज भी देवरिया जिला के अमया ग्राम में प्रति सोमवार तथा शुक्रार को हीरमती की देवी की ग्राम महिलाएँ कड़ाहि चढ़ाकर पूजा करती है। इन ग्रामीणों को क्या पता कि यही वह स्थान था जहाँ का दफीसस ने मल्लवीर जयसेन को आम्रग्राम का प्रशासक नियुक्त करके उसकी हृदयेश्वरी माधवी (जो कादफीसस की बहन थी) की ममता में विशाल बुद्ध मन्दिर का निर्माण करवाया था जिसकी बुद्ध मूर्ति आज भी खण्डितावस्था में सिद्ध बाबा के नाम से प्रसिद्ध है।

'पझा' और हरिवल जैसे मल्ल नागरिक परस्पर रचार के साक्षात एवं सजीव उदाहरण है। अपने सर्पदंशित पति हरिबल का सर्प–विष जान बूझकर चूसकर हंसते हुए अपने को न्योछावर कर देने वाली 'पझा' ने आत्मोत्सर्ग द्वारा स्वर्ग को भी शर्मा दिया। हरिबल ने भी अपनी स्वर्गीया पत्नी की दिवंगत आत्मा के तोषार्थ तथागत के परिनिर्वाण मंच पर बुद्धमूर्ति निर्माण कराया जिसके सिहांस पर अंकित है– **देय धर्मोंथ महाविहार स्वामिनो हरिबलरूचा प्रतिमा चेचं धरित दिनेन माथुरेण"**

स्वतंत्रता प्रियता, राष्ट्रादिता न्याय प्रियता एवं दानशीलता का जीता जागता नमूना हमने मल्ल गणतंत्र के नर–नारियों के जीवनवृत में देखा। इन उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त मल्लों में धर्म पशचणता इतनी कूट–कूट कर भरी थी जिसने मल्लों को ईस्वी पूर्व छठी शताब्दी से लेकर ईस्वी पूर्व उन्निसवीं शताब्दी तक अंध्यात्माकारा में चन्द्र ज्योति से प्रकाशमान बना दिया।

कोशल नरेश का वीर सेनापति बन्धुल मल्ल की विधवा पत्नी मल्लिका ने कई करोड़ रूपया के मूल्य के महालता प्रसाधन (एक विशिष्ट कीमती आभूषण)को तथागत के शव को सिर से पैर तक ढंक कर धर्म के लिए परित्याग करने वाली नारीयों में अग्र स्थान पर है जिसकी मूर्ति आज भी कुशनारा के बुद्ध निर्वाण मूर्ति के पश्र्वभाग में काले रंग के पत्थरों पर खोदकर बनाई हुई है जिसमें वह अपने स्निय श्याम केशों को फैलाकर हाथों को झुकाए शोकार्त बैठी है। इसी मल्ल की उत्त्रा, करूणा, सुमेघा तथा जयश्री जैसी ललनाओं ने अपना सर्वस्व त्यागकर अपने को बौद्ध भिक्षुणी बना निर्वाण प्राप्त करके समस्त आर्यावर्त के नारियों का मस्तक गौरव से उपर उठाया है। पावर में उत्त्रा के नाम पर निर्मित एक भिक्षुणी आश्रम आज भी देवरिया जिला के सठियावाँ गाँव में विकिर्णावस्था में मौजूद है। जयश्री के नाम पर निर्मित बिहार कुशीनगर से मच्छिम मझन नदी के तट पर ढाढा नामक ग्राम के पास घोड़प्प नाम से आज भी विद्धमान है। जहाँ पास पड़ोस की महिलाएँ जसरा माई (जयश्री माता) के लिए दीप जलाती तथा मनौतियाँ मानती हैं।

इस प्रकार बुद्धकाय से उनके निधनों परान्त कुछ शताब्दियों तक बौद्ध धर्म से प्रभाहित 'मल्ल गणतन्त्र' अपर सर्वांगीन तेजबल के प्रकाश से प्रकाशित रहा जिसे बाद में मगध राज ने अपने अधिपत्य में करके क्षतिग्रस्त करते हुए उसकी गणतन्त्रता को चूर–चूर कर दिया।

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

इसके पश्चात् वहाँ मुसलमानों के आक्रण ने एक उजाड़ स्थल का रूप दे दिया।

आज वहीं सम्पन्न मल्ल विपन्न जीवन में रहकर अपने पूर्वजों और प्राचीन वैभवों की गरिमा की स्मृति की सांस लेते हुए अपने विस्मृत इतिहास को पुनः जीवन्त करने के लिए आप से और हम से सहानुभूति एवं सहयोग के साथ श्रद्धा की अपेक्षा रखता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. इन्द्र चन्द्रशास्त्री : पालि साहित्य का इतिहास ।
2. भरत सिंह उपाध्याय : पालि साहित्य का इतिहास।
3. गोविन्द चन्द्र पांडेय : बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास।
4. रतिभानु सिंह : प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृति इतिहास।
5. श्री लक्ष्मण शास्त्री जोशी : वैदिक संस्कृति का विकास ।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*